Newspaper	Page No.	Date
Yash Bharat		09-05-2014

नि:शुल्क महाशिविर बना किसानों का सहारा

दवा-दारू और सेहत का बूस्टर पशुओं को

सिंगरौली। नगवां गांव की निवासी सुन्दरी को अपनी इकलौती गाय की कमजोरी एवं कम दूध देने का कारण समझ में नहीं आ रहा था। किन्तु जब उन्होंने लाउड स्पीकर पर की जा रही मुनादी से गांव में आयोजित होने वाले पशु महा शिविर के बारे में सुना तो उनके मन में आषा जगी कि यही अवसर है जहां पर अपनी दुलारी गाय लाली के बारे में जानकारी एवं उपचार प्राप्त किया जा सकता है।

ग्राम नगवां, खैरही, कर्सुआलाल, कर्सआराजा, मलगा, बन्धौरा एवं अन्य गांवों के सैकड़ों किसान आज सुबह से बड़ी संख्या में अपने घरेलू पशुओं के साथ शिविर में आये जिनमें सुन्दरी देवी भी शामिल थीं। शिविर में पशु पालन विभाग के वरिष्ठ चिकित्सक डॉ0 पी0 सिंह एवं डॉ. सुमन्त वर्मा द्वारा पशुओं की जांच एवं इलाज किया जा रहा था। डा0 सिंह ने सुन्दरी की गाय लाली के स्वास्थ्य की जांच कर उचित आहार पोषण संबंधी जानकारी सुन्दरी को दी, अतिरिक्त पोषण हेतु दवाई दी गई तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिये टीका भी लगाया।

सुन्दरी देवी किये गये उपचार से संतुष्ट हुई तथा उन्होंने कहा कि "इससे पहले लाली को कभी कोई टीका या दवा नहीं मिली और मुझे उम्मीद है कि जो दवाई दी गई है उससे मेरी लाली की सेहत मे सुधार होगा।" शिविर में दो चिकित्सक तथा छः सहायक पशु चिकित्सा अधिकारी उपस्थित थे जिनके द्वारा एक ओर जहां पशुओं का टीकाकरण किया जा रहा था वहीं दूसरी तरफबीमार पशुओं का उपचार कर दवाई दी जा रही थी। ग्राम खैरही के सरपंच सुभाष जायसवाल ने कहा कि -"इस क्षेत्र में इतने उच्च स्तर पर पशु चिकित्सा से संबंधित षिविर पहले कभी भी आयोजित नहीं किये गये है।

आज के शिविर से आसपास के गांव के किसानों एवं उनके घरेलू पशुओं को बहुत लाभ मिला है शिविर के आयोजन के लिए मैं एस्सार को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ।" इस मौके पर पशु पालन विभाग के उप निदेशक यू0पी0 सिंह भी उपस्थित थे। उन्होंने कार्यरत चिकित्सकों के दल का उत्साह देखते हुए कहा कि "भविष्य में भी इस तरह के षिविरों में विभाग एस्सार का पूरा सहयोग करेगा।" शिविर में उपस्थित डॉ0 वर्मा की राय में इस क्षेत्र में बकरियों की संख्या काफी अच्छी है किन्तु दूध के बेहतर उत्पादन के लिये जमुनापारी नस्ल की बकरियों का पालन किया जाना चाहिये। शिविर में आये ज्यादातर पशु क्रीमी संक्रमण, कुपोषण, अगलैक्टिया एवं बाहरी कीड़ों का संक्रमण से पीड़ित थे। चिकित्सकों द्वारा उक्त बीमारियों के इलाज के लिये दवाएं दी गई तथा षिविर में कई पशुओं का बधियाकरण भी किया गया।

शिविर की सफलता को देखते हुये एस्सार की कार्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी निभाने वाली एस्सार फाउण्डेशन के प्रतिनिधि देबाशीष मुखर्जी ने कहा कि शीघ्र ही इस क्षेत्र में दूध उत्पादन में वृद्धि एवं पशुओं के नस्ल सुधार पर केन्द्रित शिविर का आयोजन किया जायेगा।